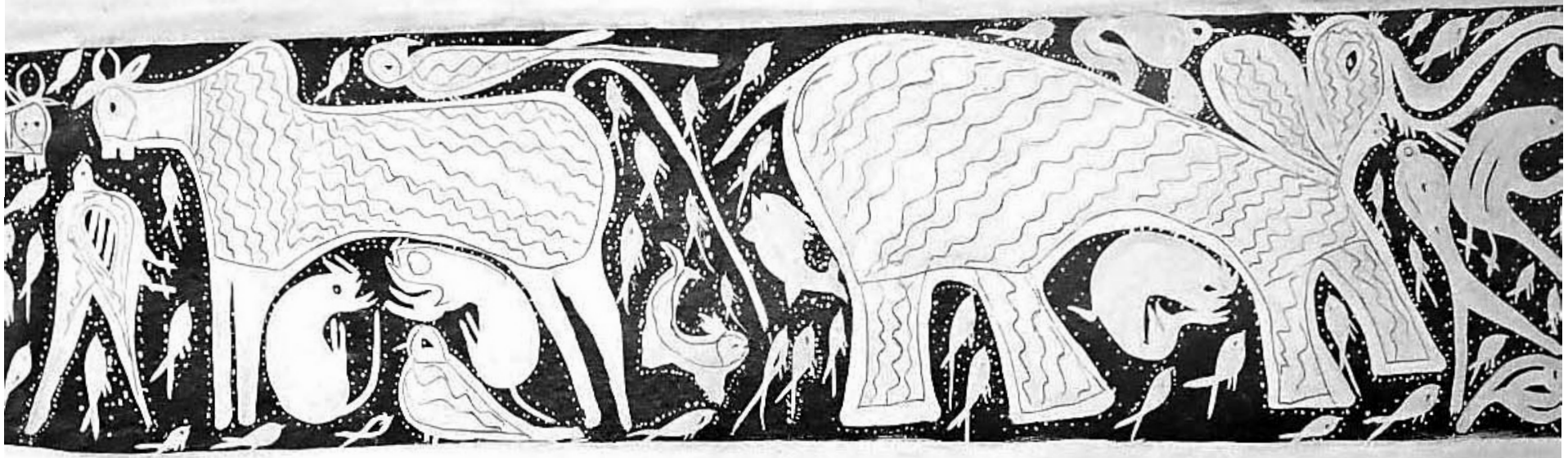

मोरंगे

नवम्बर 09

वर्ष 1 अंक 5

सम्पादन : प्रभात

सहयोग : भारती, कमलेश, मीनू मिश्रा, रंजीता
डिजाइन : शिव कुमार गाँधी
आवरण पर माँडना मदन मीणा के सौजन्य से
प्रूफ : नताशा
वितरण : लोकेश राठौर

प्रबंधन : मनीष पांडेय, सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
पत्रिका का पता :
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
3/155, हाउसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर, राजस्थान
Email;graminswm@gmail.com
website; graminshiksha.in
ph.no. & fax 07462-233057

इस बार

कविताएँ
ओ बीज
देखो टमाटर
मैं खेत पर जाती हूँ
गिलहरी

कहानियाँ
गंगाधरन मर गए
बंदर और हाथी ने शादी की
रोने चिल्लाने वाला राजा
गुठली

यादें
मोर
फ्रेजियन नस्ल की गायें
भाग तो एक रही थी, तुम बता रही हो दो चोट्टियो झूठ बोलती हो ??

तथा पखेरू मेरी याद के व अन्य स्तम्भ

कहानिका

एक कहानिका थी। वह चाँद की नदी में अपनी छाया के साथ टहल रही थी। टहलते हुए ऊब गई तो वह एक बुढ़िया के पास गई। उसने बुढ़िया से कहा–'चेहरे पर झुर्रियों की सुंदर रेखाओं से सजी हल्की–फुल्की बुढ़िया क्या तुम मुझे सुनना चाहोगी ?' बुढ़िया ने कहा–'मेरे पास पहले ही कहानियों की कई रंग–बिरंगी पोटलियाँ हैं। अगर तुम उनसे कुछ अलग हो तो मैं तुम्हें माँडनों से सजे आँगन में फैल–फूटकर बैठकर सनूँगी।'

'मैं तो अभी–अभी एक नील सरोवर में पैदा हुई हूँ। रात में खिली कमलिनी की तरह सुंदर हूँ। मैं तुम्हें शहद की तरह मीठी और बचपन की तरह यादगार लगूँगी।' कहानिका ने कहा।

बुढ़िया को अपने अकेलेपन के लिए ऐसी ही किसी सहायिका की जरूरत थी। वह घुटनों पर कुहनी और गाल पर हथेली टेककर कहानी को सुनने लगी। सुनते–सुनते उसके चेहरे की झुर्रियों की रेखाएँ जीवित होकर हँसने लगी। हँसते–हँसते बुढ़िया की पलकों की कोरें जल से सिंच गई। उसने अपनी घिसी लूगड़ी से पलकों के तट पर आए पानी को पौंछा।

कहानिका आँगन पार कर जा रही थी। बुढ़िया प्यारी कहानिका को जाते हुए देखती रही। उसने अपनी कहानियों की रंग–बिरंगी पोटलियों में इस कहानिका के नाम का धान के रंग का फूल टाँग लिया।

कहानिका चाँदनी रात में खार के मैदान में वहाँ जाकर फूस में सो गई जहाँ बहुत सारे सियार भी सो रहे थे। अगली सुबह वह बच्चों के स्कूल की तरफ चल पड़ी। बच्चों के स्कूल में वह एक शिक्षक से जाकर मिली। शिक्षक ने कहा–'मुझे सरकारी डाक बनानी है। मुझे तुम जैसी फालतू चीज के लिए बर्बाद करने को समय नहीं है।' 'ये शिक्षक है कि टाइपराइटर ?' ऐसा सोचते हुए कहानिका स्कूल से बाहर जाने लगी। जाते हुए उसे एक कक्षा में एक उदास बैठी लड़की दिखी। कहानिका कुछ सोचते हुए उस कक्षा में चली गई। 'कितनी अच्छी बात है कि कक्षा में कोई शिक्षक नहीं है।'–कहानिका ने राहत की साँस ली। वह असल में आयी तो बेला के लिए थी पर उसने सारे बच्चों से कहा–'क्या तुम मुझे सुनना चाहोगे ?'
कुछ बच्चे अपने काम में और कुछ अपनी मटरगश्तियों में मशगूल थे। किसी का ध्यान उसकी तरफ नहीं गया। कहानिका ने फिर से कहा–'गुलाब के फूलों की तरह सुर्ख उम्र के बच्चो क्या तुम मुझे सुनना चाहोगे ?'
इस बार एक पुस्तक–भक्षी लड़की का ध्यान कहानिका की तरफ गया। 'मैं तुम जैसी हजार को पढ़ चुकी हूँ।' ऐसा कहकर पुस्तक–भक्षी लड़की ने वापस अपना सिर प्राचीन कथाओं की एक किताब में दे लिया।

'मैं तो अभी–अभी कमल सरोवर में पैदा हुई हूँ। रात में खिली कमलिनी की तरह सुंदर हूँ। मैं तुम्हें दूध की तरह ताकतवर और नींद की तरह मीठी लगूँगी।'
कहानिका ने अपनी परियों जैसी पलकों को झपझपाते हुए कहा।

'पुस्तक–भक्षी लड़की के दूसरे दोस्तो क्या तुम मुझे सुनना नहीं चाहोगे ?' कहानिका ने एक बार फिर सबसे कहा। इस बार सब बच्चे कहानिका की तरफ मुड़कर देखने लगे। कुछ बच्चे बोले–'ये पुस्तक–भक्षी तो रोज डाँट खाती है इसका क्या है ?हमें तो कई चीजें रटनी है। और उनमें से दो–तीन बच्चे आँख मींचकर रटने लगे–'ऐसी पीटी, ऐसी पीटी कि ईएमबीईआर, सितम्बर। सितम्बर माने सितम्बर। ओ सीटी ओ बीईआर, अक्टूबर। अक्टूबर माने अक्टूबर। एनोवीई एमबीईआर नवम्बर। नवम्बर माने नवम्बर। डीईसीई एमबीईआर, दिसम्बर। दिसम्बर माने दिसम्बर। ...।'

कुछ इस तरह घिस्सा लगा रहे थे–'बाबर का बेटा हुमायू–हुमायू, हुमायू का अकबर–अकबर, अकबर का बैराम खां, बैराम खां नहीं जहाँगीर–जहाँगीर, जहाँगीर का शाजाँ–शाजाँ शाजाँ का औरंगजेब–औरंगजेब, औरंगरजेब का ... औरंगजेब का ... औरंगजेब का...। याद हो गया, याद

हो गया। अर्द्धवार्षिक के लिए यहीं तक याद करना है। यहींतक–यहींतक–यहींतक।'

'मशीन की तरह मुँह खोल और बंद कर रहे बच्चो क्या तुम ऊबे नहीं हो ?' कहानिका ने फिर से कहा।
'ऊबे हुए तो इतना हैं कि हम अपने बाल नोंचना चाहते हैं।' बच्चों ने ऐसा सोचा पर कहा नहीं। वे कहानिका की तरफ देखते भर रहे। मानो कह रहे हों–'बेचारी कहानिका क्या तुम हमें हँसा भी सकोगी ?'
'ठीक है पहले मैं तुम्हें हँसाती ही हूँ।' ऐसा कहकर कहानिका ने छोटे–छोटे दो ऐसे किस्से फिसलाए कि बच्चे पेट पकड़–पकड़ कर हँसने लगे। वे फर्श पर ही लोटपोट हो गए। हँसते–हँसते एक–दूसरे पर गिरने लगे।

कहानिका इस कक्षा में आने के अपने उद्देश्य को भूली नहीं थी। वह उदास लड़की बेला के लिए आयी थी। जब सारे बच्चे हँस–हँस कर दोहरे हो रहे थे, बेला मुस्करायी भी नहीं थी। वह इतनी उदास थी। कहानिका ने उसकी आँखों को पढ़ा उसके दुख को पहचाना। बेला के लिए वह एक उदास लड़की की कहानी बन गई। बेला उसमें खोने लगी। कहानी पूरी हुई तो बेला के चेहरे पर एक अलग तरह का विश्वास था। एक अलग तरह की दृढ़ता थी, जैसे उसने अपने लिए कोई ऐसा निर्णय कर लिया जो उसकी समस्या को मिटा देगा।

कहानिका जब कक्षा से जाने लगी तो सब बच्चों ने अलविदा में हाथ हिलाया मगर बेला देर तक उस रास्ते को देखती रही। जैसे कह रही हो–'प्यारी कहानिका तुम गणित के सवालों को हल करने के तरीकों की तरह सुलझी हुई हो। ससुराल चल गई दीदी की तरह सरल और माँ के आँसुओं की तरह अपने में डुबाने वाली। मैं फिर कभी किसी उलझन में पड़ जाऊँ तो क्या तुम फिर आओगी ?'

कहानिका साँझ के निर्जन साँवले आकाश में नीड़ों को लौटते पक्षियों के झुण्डों के साथ उड़ने लगी। पशु,पक्षी,कीड़े–मकोड़े, इंसान इस दुनिया में सबके घर थे। कहानिका को हमेशा अपने लिए घर की तलाश करनी पड़ती थी। उसे सुदूर एक गाँव में एक घर दिखाई दिया जहाँ एक किसान औरत आँगन में चूल्हे पर राबड़ी को अटोल रही थी। उसके दो बच्चे आँगन के नीचे धूल में खेल रहे थे।

खलिहान में गेहूँ के पुआलों पर सोने जाने से पहले कहानिका ने रात के खाने के बाद का कुछ समय यहीं ठहरने का विचार किया। वह किसान के फूस के छप्पर पर चाँद के पास जाकर बैठ गई। अब वह उस पल का इंतजार करने लगी जब सोने से पहले बच्चे माँ की गोद में लोटपोट होते कहेंगे–'वो ही वाली कहानिका जिसमें केले के पत्तों की हरी गुफाओं में ओस की बिल्लियाँ आँखें चमकाती घूमती हैं।'

प्रभात

गुठली

माँ ने आलूबुखारे खरीदे और सोचा कि दोपहर के खाने के बाद बच्चों को देगी। उसने उन्हें टोकरी में रख दिया। महेश ने आलू बुखारे कभी नहीं खाए थे इसलिए वह उन्हें बार–बार सूँघता रहा। महेश को वे बहुत अच्छे लगे। उसका मन उन्हें खाने के लिए ललचाने लगा। वह लगातार आलूबुखारों के आसपास मँडराता रहा। जब कमरे में कोई नहीं था तो वह अपने को रोक नहीं पाया। उसने एक आलूबुखारा उठाकर खा लिया। खाने के पहले माँ ने आलूबुखारे गिने तो एक कम था। उसने बच्चों के पिता को बताया।

खाना खाते हुए पिता ने कहा–'बच्चो क्या तुममें से किसी ने एक आलूबुखारा खाया है ?' सभी ने कहा–'नहीं।' महेश का चेहरा चुकन्दर की तरह लाल हो गया। मगर उसने भी यही उत्तर दिया–'नहीं मैंने नहीं खाया।'

तब पिता ने कहा–'तुममें से किसी ने एक आलूबुखारा खा लिया है, यह बुरी बात है। मगर मुसीबत सिर्फ इतनी ही नहीं है। असली मुसीबत तो यह है कि आलूबुखारों में गुठलियाँ होती है। अगर किसी को उसे खाने का ढंग न आता हो और गुठली निगल जाए तो वह अगले दिन मर जाता है। मुझे बस इसी बात का डर है।

महेश के चेहरे का रंग उड़ गया और उसने कहा–'नहीं गुठली तो मैंने खिड़की से बाहर फेंक दी थी।'

सभी हँस दिए मगर महेश रो पड़ा।

लियो तोलस्तोय

ओ बीज

बीज ओ बीज
पेड़ उगा दे
पेड़ ओ पेड़
फूल खिला दे
फूल ओ फूल
तितली बुला दे
तितली ओ तितली
सैर करा दे
घास ओ घास
भैंस धपा दे
भैस ओ भैस
दूध पिला दे

मनराज मीणा
उम्र–10 वर्ष, समूह–झील

देखो टमाटर

देखो टमाटर
फुटबाल जैसा
उसके भीतर
खट्टा–मीठा पानी
बीज उसके
अमरूद के बीज जैसे
रंग है उसका
गुलाब के फूल जैसा
वह आता छोटे पेड़ों में
उगता है काले खेतों में

भरत लाल गुर्जर
उम्र–14 वर्ष, समूह–सूरज

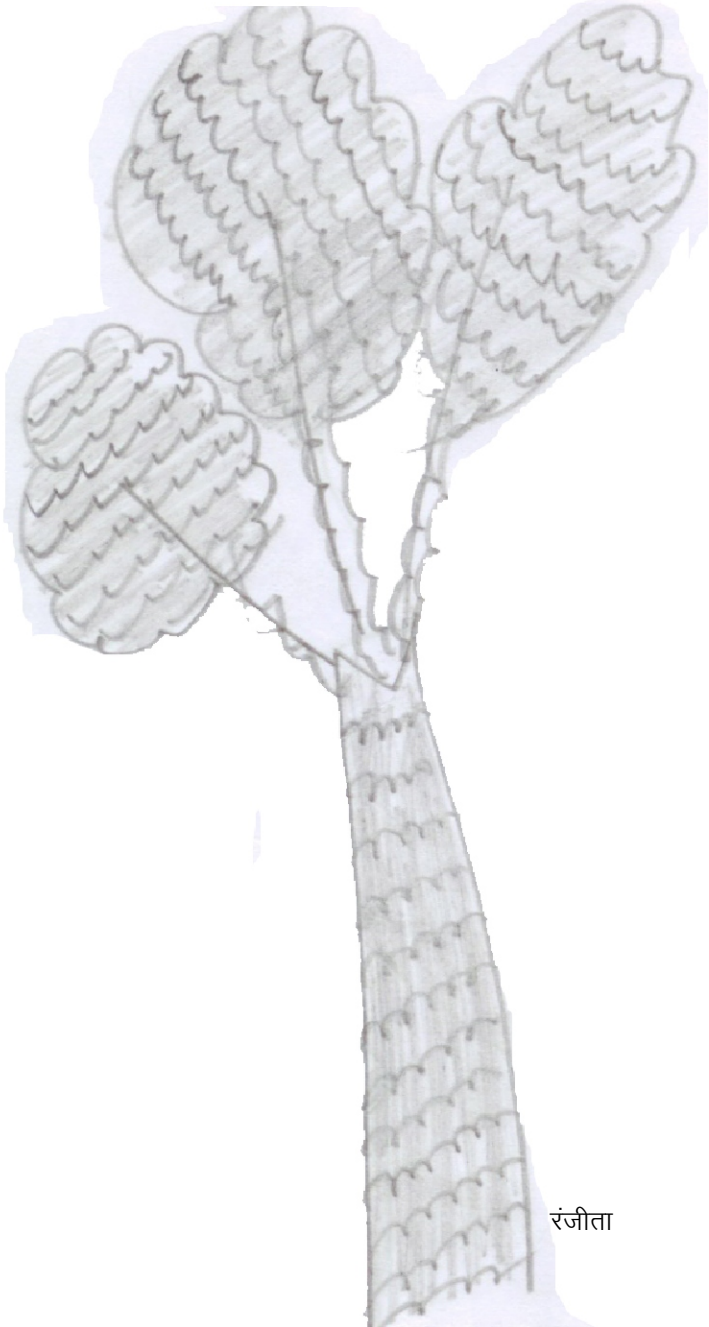
रंजीता

मैं खेत पर जाती हूँ

मैं खेत पर जाती हूँ
फसलों की गुड़ाई करती हूँ
जब पापा फसलों में पानी देते हैं
मैं भी पापा की मदद करती हूँ
फिर फसल बढ़ती है
और जब फसल पक जाती है
तो हम फसल काटते हैं
फसल काटते हुए थक जाते हैं
दोपहर में पेड़ के नीचे बैठकर
खाना खाते है
फिर काटने में लग जाते है
जब फसल कट जाती है
हम उसे थ्रेसर से निकालते हैं
चारा और अनाज घर लाते हैं

माया मीणा
उम्र 13 वर्ष, समूह–सागर

गिलहरी

एक गिलहरी पूँछ हिलाती
छत पर धूप सेकने आती

गुर–गुर गुर–गुर वह दौड़ी आती
उछल–कूद वह खूब मचाती

दोनों हाथ मुँह पर रखती
मुझे देख टकटकी लगाती

जब मैं बैठी खाना खाती
चक्कर वो थाली के लगाती

दे दूँ उसको छोटा टुकड़ा
खिल जाए गिल्लो का मुखड़ा

भारती शर्मा, शिक्षिका, बोदल

बंदर और हाथी ने शादी की

एक बंदर था। एक बार उसने एक हाथी को देखा। उसे हाथी अच्छा लगा। उसने हाथी से शादी कर ली। हाथी रोटी–सब्जी खाता था। बंदर अंगूर और चीकू खाता था।

एक दिन हाथी ने बंदर को रोटी बनाने को कहा। बंदर ने मना कर दिया। हाथी को गुस्सा आ गया। उसने बंदर को खूब पीटा। बंदर नाराज होकर अपने घर चला गया और अपनी मम्मी को सारी बात बतायी। बंदर की मम्मी ने फिर रोटी बनायी और हाथी को भी बुलाकर रोटी खिलायी।

(यह कहानी **अमन,अंकित,सेजल,लोनी,अनुष्का,नंदनी और वत्सा** ने मिलकर बनायी है।)

जय सिंह बैरवा

रेशमा

रोने–चिल्लाने वाला राजा

एक बार की बात है कि एक जंगल था। उस जंगल में एक राजा और रानी रहते थे। एक दिन की बात है कि रानी का भाई आया। राजा ने उससे पूछा–'क्या समस्या है ?' रानी के भाई ने कहा सब ठीक है। और अपनी बहन से पूछा–'बहन तुम मेरे साथ चलोगी क्या ?' बहन बोली कि भाई चले चलूँगी। फिर वह बोली कि भाई अभी तो शाम हो गयी है। कल चलेंगे, अभी तो नहीं चलेंगे।

फिर सुबह वह दोनों बहन–भाई चल दिये। राजा अकेला रह गया। शाम को राजा ने खाना बनाया। खाना बनाने के लिए चूल्हा जलाया। धुँए से उसकी आँखों में आँसू आ गए। एक रोटी को सेकता और एक उँगली जला लेता। उँगली जलने पर बावड़ों की तरह चिल्लाता। रोटी बनाता जाता, उँगली जलाता जाता और चिल्लाता जाता। धुँए से आँखों में आँसू भर जाते वो अलग।

रानी के चले जाने के बाद राजा खूब रोया, खूब चिल्लाया। रानी तो अपने भाई के साथ चली गई थी उसे तो पता ही नहीं था कि राजा भी रोता–चिल्लाता है।

आरती मीना, उम्र–11 वर्ष, समूह–झील

रोशन

मोर

एक बार मैं घर पर बैठा था। तभी उधर से एक मोर आया। मोर हमारे घर के ऊपर आकर बैठा तो मैंने उसे कोल्हू को हिलाते देखा। मैंने सोचा यह कोल्हू गिराएगा इसलिए मैंने उसे उड़ा दिया। वह बाड़े में जाकर बैठ गया। मैं बाड़े में गया और मोर के पत्थर की मारी। मोर के मुँह पर लगी। वह उड़कर वहाँ से थोड़ी दूर चला गया। अब वह रोड पर जा बैठा। मैं रोड पर जाकर उसको पकड़ने लगा। मैं सोच रहा था वह उड़ेगा पर वह नहीं उड़ा। मैने उसे पकड़ लिया वह फिर भी नहीं उड़ा। रोड पर एक आदमी जा रहा था। उसने कहा–'यह तुझे खा जायेगा।' मैने मोर को छोड़ दिया। वह वहीं बैठा रहा। आदमी के जाने के बाद मैं उस मोर की ओर बढ़ा। मोर झट से उड़ गया। मैं उसे देखता रह गया। वह उड़कर नीम पर जा बैठा फिर मैं घर आ गया।

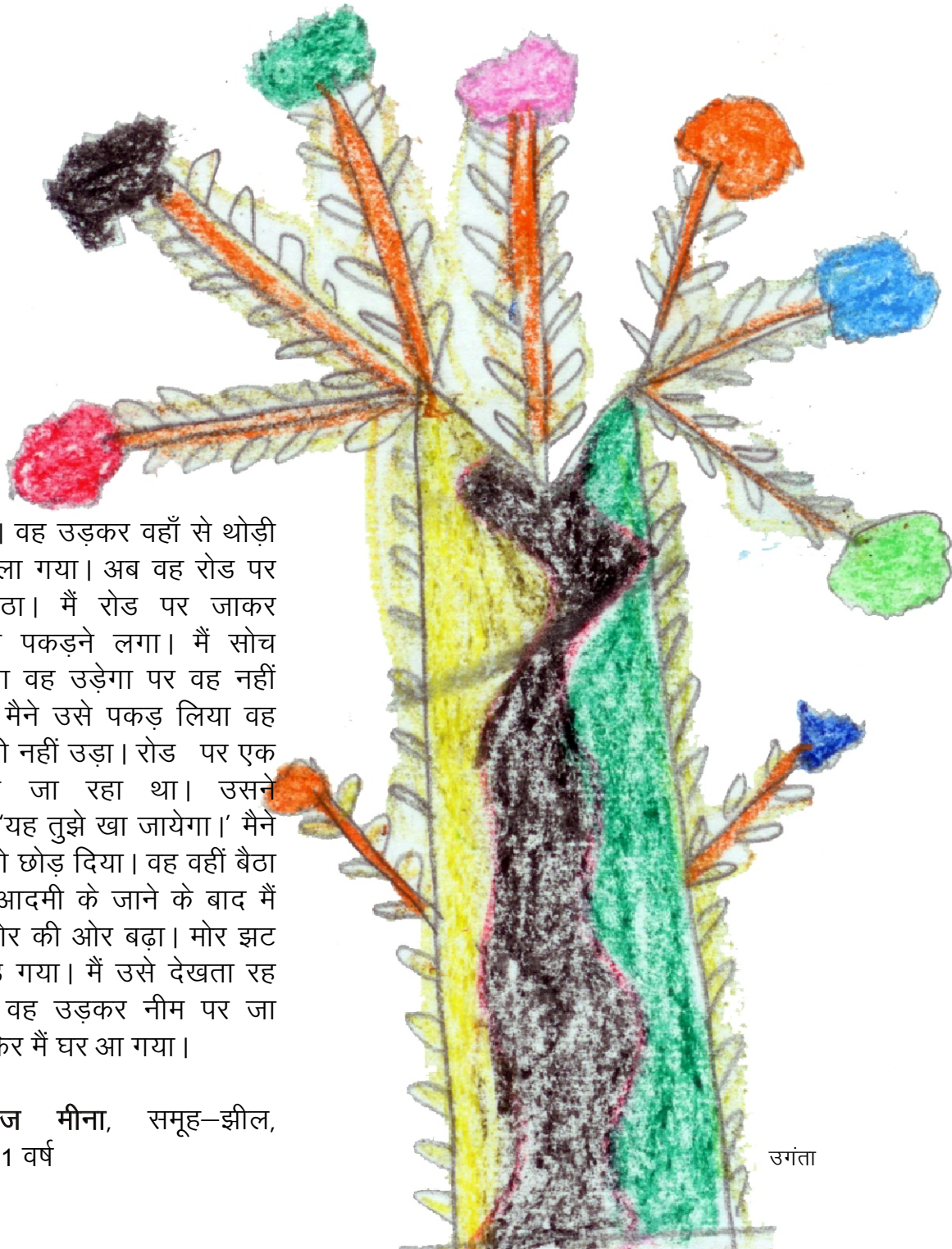

दिलराज मीना, समूह–झील, उम्र–11 वर्ष

उगंता

फ्रेजियन नस्ल की गायें

पहले हमारे घर में बहुत सारी फ्रेजियन नस्ल की गायें नहीं थी। जिन्हें जर्सी गाय भी कहते हैं। इन्हें पापा अभी लाए थे हमारे सामने ही। ये गायें एक टाइम का ही 6–7 किलो दूध देती हैं। इनके लिए मेरे पापा ने ठाणें (चारा चरने की जगह) बनवायी। उन्हीं के पास पानी पीने की चाठियाँ बनवायी। उनमें ऐसा था कि एक चाठी में पानी डालते ही पूरी चाठियों में चला जाता और गायें पानी पी लेतीं। मम्मी को इन गायों की बहुत देखभाल करनी पड़ती थी इसलिए मेरी मम्मी परेशान हो जाती थी। मम्मी की परेशानी को देखकर पापा ने दो ही गायें रखीं। बाकी को बेच दिया। अब दो गायों की अच्छी देखभाल हो जाती थी। थोड़े दिनों बाद मेरे पापा जिला–प्रमुख बन गये। हम बहुत खुश हुए। फिर पापा ने एक मारूति खरीद ली और दो मोटरसाईकिल खरीद ली। एक मेरे चाचा को दे दी। पहले हमारे छत पर कमरे नहीं बनवाए थे लेकिन अब हमारे घर की छत पर दो कमरे हैं। मेरे पापा ने खेत पर सौर–ऊर्जा की मोटर व घर में उजाला करने के लिए ट्यूबलाइट लगवा ली। और टीवी ले आए। पापा पाँच साल बाद जिला–प्रमुख पद से हट गये। अब पापा केंचुए लाए और खाद में डाल दिये। और पानी की मोटर लगा ली जिससे हमारे घर ही पानी आने लगा। पहले हमारे खेतों पर मोटर नहीं लगायी थी। लेकिन अब खेतों पर मोटर लगवा ली। पहले मेरे गाँव की लड़कियाँ बहुत कम पढ़ती थीं लेकिन अब हर घर से हरेक लड़की पढ़ने जाती है। पहले मेरे गाँव में बाल–विवाह ज्यादा होते थे। लेकिन अब बाल विवाह कम होते हैं। पहले मेरे गाँव में स्कूल नहीं था लेकिन अब स्कूल बन गया है। मेरे गाँव में पहले लड़के–लड़कियों में बहुत अन्तर करते थे लेकिन अब कम करते हैं। पहले और अब में अंतर देखें तो हमारा घर ही नहीं पूरा गाँव ही बहुत बदल गया है।

मोनिका मीणा, उम्र 12 वर्ष, समूह–सागर

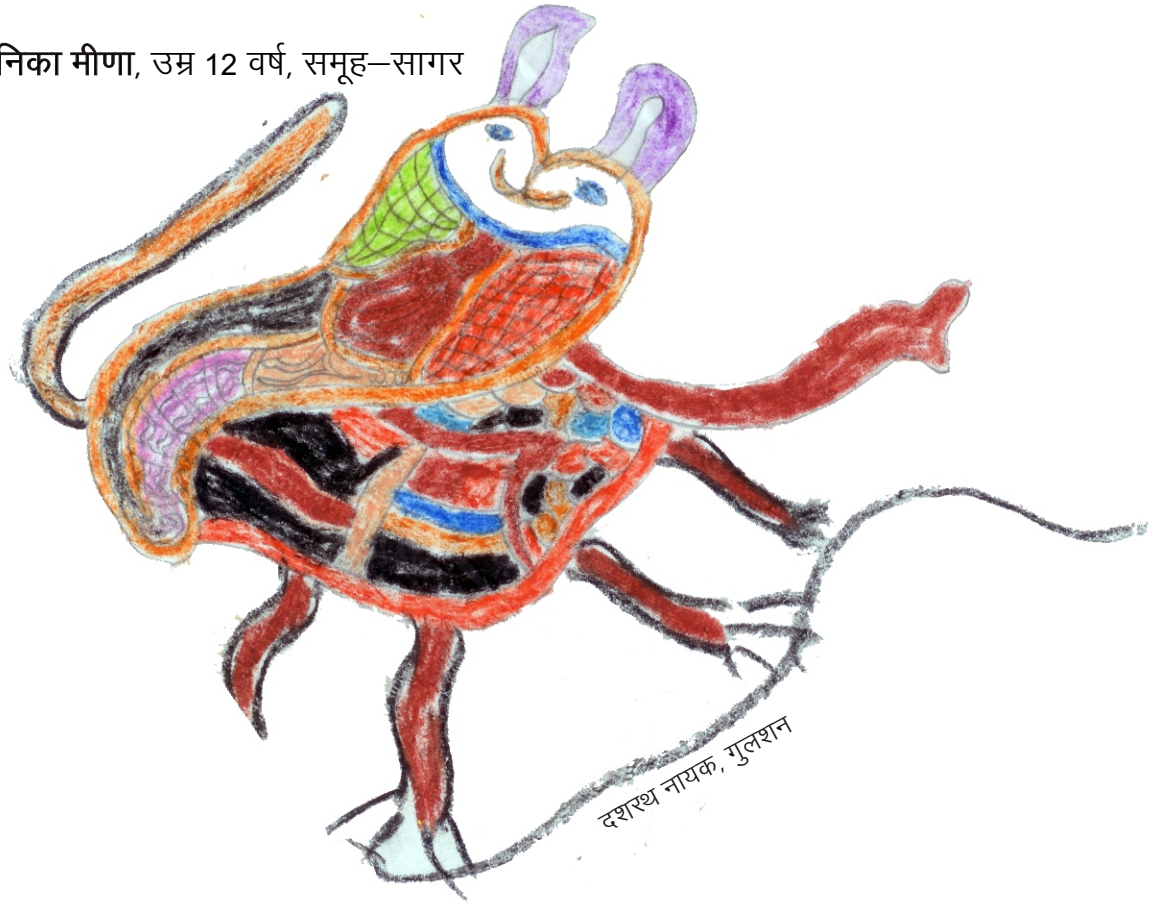

भाग तो एक रही थी, तुम बता रही हो दो चोट्टियो झूठ बोलती हो ??

मैं कक्षा तीन में पढ़ती थी। हमारी कक्षा में एक लड़की थी, उसका नाम जनकदुलारी था। पूरी कक्षा उसे दुलारी कहती थी। मैं उसे जनक कहती थी। ये लड़की जब भी कक्षा में आती खाने–पीने की खूब सारी चीजें लाती। टॉफी, बिस्कुट, मूँगफली, पट्टी, गजक, अमरूद आदि। कक्षा में बैठकर खाती रहती। उसके साथ एक लड़की और रहती थी, उसका नाम सुमन था। मैं सुमन के पास बैठती थी। जब भी जनक कोई चीज खाती, मैं और सुमन उससे माँगते कि हमें भी खिला दे ?वो थोड़ी सी चीज हमको भी दे देती। उसका बैग हमेशा चीजों से भरा रहता था। हम उससे खूब पूछते कि तू इतनी सारी चीजें कहाँ से लाती है ? लेकिन वह कुछ नहीं बताती। और हम उसकी चीजें बँटाते तो वो हमको खूब गालियाँ भी देती। हमारे बार–बार माँगने से वो परेशान हो गयी तो उसने हमें चीजें लाने का तरीका बताया। उसने हम दोनों से कहा कि, 'अगर किसी को कहा तो अच्छी बात नहीं होगी।' हमने कहा,'किसी से नहीं कहेंगी। हम भला क्यूँ कहेंगी ?' उसे हम पर विश्वास नहीं हुआ। उसने अपने बस्ते से किताब निकाली और बोली,'खाओ दोनों विद्या माता की कसम कि किसी से नहीं कहोगी।' हमारे लिए इससे आसान कुछ भी नहीं था क्योंकि हमने कभी इस कसम से कोई नुकसान या फायदा होते नहीं देखा था। हमने किताब पर हाथ रखकर कह दिया, 'विद्या माता की कसम।' पर उसे तो हम पर तब भी विश्वास नहीं हुआ। वह बोली, 'तुम पे तुम्हारे भगवान की कसम है, अगर किसी से कही तो तुम्हें पाप चढेगा।' इतने से भी उसका पेट नहीं भरा तो वो बोली–'तुमको तुम्हारे भाई–बाप की सौगन्ध है और वे मर जायेंगे।' सुमन बोली, 'बताना है तो बता, भाई, बाप की सौंगन्ध मत दे।' सुमन सोच रही होगी कि कसम से कहीं भाई,बाप को कुछ हो ही न जाए ? फिर जनक ने बताना शुरू किया। उसने बताया कि वो छुट्टी में या लंच में किसी भी समय टॉफी की दुकान पर और अमरूद वालों के ठेलों पर जाती है और चुपचाप चीज उठा लाती है। छुट्टी और लंच के समय इन जगहों पर बच्चों की खूब भीड़ होती है। हम उससे बोलीं 'तुझे किसी ने पकड़ा नहीं ?' वह बोली, 'अरे भीड़ में काँई पतो लगे। चाहो तो आज ही तुम चल के देख लो।' हम उसकी बात सुनकर लंच होने का इंतजार करने लगे।

जैसे ही लंच हुआ हम तुरन्त उसके साथ स्कूल से बाहर आ गये। थोड़ी ही दूर अमरूद वाले का ठेला था। उस पर खूब बच्चे खड़े थे। हम भी जाकर खड़े हो गये। ठेले वाला जोर–जोर से पुकार रहा था, गुस्सा कर रहा था, 'दूर हटो–दूर हटो।' पर बच्चे सुन नहीं रहे थे। कोई रूपये का, कोई चवन्नी का बेर, कोई अठन्नी का अमरूद माँग रहा था। इसी बीच जनक ने मौका देखा और दो अमरूद उठा के अपनी स्कर्ट की जेब में डाल दिये और वहाँ से भाग ली। हम उसे देखते रह गये। स्कूल में आकर बोली, 'देखा कितना आसान है।' उसे देखकर हमने भी इस काम को अंजाम देने की सोची। उसने कहा आज छुट्टी के बाद अपन तीनों माणू की दुकान पर जायेंगे।

जैसे ही छुट्टी हुई, हम तीनों माणू की दुकान पर पहुँच गये। उसकी दुकान पर भी खासी भीड़ थी। योजना के अनुसार सुमन जोर–जोर से चिल्लाई ओ माणू, ओ माणू या टॉफी

कितना की है ?या अमरूद कितना को है ?या बिस्कुट कितना को है ?' माणू उसे बता रहा था। वो हमारी योजना को बिल्कुल नहीं समझ पा रहा था। मैंने चुपचाप बिस्कुट की ट्रे में से बिस्कुट खिसका लिये और जोर से भाग के श्रीहनुमान जी मन्दिर पर आकर बैठ गयी। उठाते समय देखा नहीं कि कितने आये है। वहाँ आकर देखा तो 4–5 बिस्कुट आ गये थे। वे दोनों भी आ गईं। हम तीनों ने चोरी के बिस्कुटों को ईमानदारी से बाँटकर खा लिया।

अब यह क्रम रोज चलने लगा। कभी कोई हाथ मारता, कभी कोई हाथ मारता। खूब चीजें खाते। पर एक दिन हमारा क्रम टूट गया। हम तीनों एक साथ मिठाई की दूकान पर गये और अपने काम को अंजाम देने लगे। जिस दुकान पर उस दिन हम गये थे शायद उस दूकान वाले को हम पर कुछ शक हो गया था। जनक ने मौका देखकर इमली की पन्नी में हाथ डाला और भाग ली। दुकानदार ने उसे भागते हुए देख लिया और अब उसने हम दोनों को पकड़ लिया। हमारी चोटियों को खींचकर दो–तीन थप्पड़ लगाये। बोला, 'क्या कर रही थीं ?' हमने कहा, 'कुछ भी नहीं।' उसने फिर जोर से थप्पड़ मारा तो सुमन बोली, 'दुलारी इमली ले गयी।' अब वो मेरी तरफ झाँका। बोला, तू बोल ?' मैं बोली, 'जनक इमली ले गयी।' वह गफलत में पड़ गया। उसे हमारी बात पर विश्वास नहीं हुआ। बोला, 'भाग तो एक रही थी, तुम नाम ले रही हो दो का, पक्की चोट्टी हो चुकी हो क्या ?' हमने उससे खूब कहा, 'भाई, बाप की सौगंध जनक और दुलारी एक ही है, दो नहीं।' लेकिन वो हमारी बात नहीं माना और हमको पकड़ कर स्कूल में ले गया। हम हथकड़ी लगे अपराधियों की तरह उसके साथ जा रही थीं। स्कूल में जाकर वह बोला–'ये दोनों मेरी दुकान से चीजें उठाती हैं।' मैडम ने हमारे बस्ते और जेबों की तलाशी लीं। तलाशी में काफी चीजें निकलीं। उसके बाद हमारी खूब धुनाई हुई। पूरे दिन कक्षा में हाथ ऊँचा करके खड़ा होने की सजा मिली।

उधर जनकदुलारी फरार हो गई थी। वह अपने घर भाग गई थी। हमने सोचा वो तो बच गयी। ये ठीक नहीं। हमने उसकी बात मैडम से कह दी। अगले दिन वो स्कूल आई तो उसे पता नहीं था कि उसका भंडा फोड़ा जा चुका है। आते ही उसकी कक्षा में खूब धुनाई हुई और उसको मुर्गा बने रहने की सजा मिली। वह सारा प्रकरण समझ गई। मुर्गा बनी हुई ही हमको आँख दिखाते हुए बोली, 'छुट्टी में बाहर मिलना।' फिर बोली, 'पहले तो चीज खाने के लिए मँगतियों की तरह आ जाती थीं। उस दिन तो कैसी–कैसी सौगन्ध खा रही थीं। आज तुम दोनों को छोड़ूँगी नहीं। हम दोनों ही जनक से कद और उम्र में छोटी थीं। छुट्टी के बाद उसने अकेली ने ही हम दोनों की धुनाई की। और धमकी दी, 'आईन्दा कभी मुझसे मुझसे बोलना नहीं, समझीं।' इसके बाद हमने उससे कभी बात नहीं की।

रंजीता, शिक्षिका, कटार फारिया

हीहीहीही ठीठीठीठी

एक लड़की की शादी थी। जब लड़की विदा होने लगी तो लड़की का भाई बड़ा दुखी हुआ और निराश मन से अपने जीजाजी से कहने लगा–''मेरी बहन का ख्याल रखना।''
जीजाजी ने उसे सम्भालते हुए कहा–''चिन्ता मत करो, जैसी तुम्हारी बहन, वैसी ही मेरी बहन।''
(प्रस्तुति–सवाईमाधोपुर स्कूल से)

शिक्षिका–मल्ली तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ था ?
मल्ली–जी तिरुअनंतपुरम में।
शिक्षिका–तिरुअनंतपुरम की स्पेलिंग बोलो।
मल्ली–मैम, मेरा जन्म शायद गोआ में हुआ होगा।

(प्रस्तुति–नरेश, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र)

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

1 अगर कड़ाई, बगर कड़ाई, सीरो राँध्यो बड़ो सुवाद।
2 चल–चल बकरा, नंदी सूख गयी, मर बकरा।
3 एक न्हार के हाथ कोनी, पूँछ से पानी पीवै।
4 धौड़ौ घोड़ौ जाबरी सी पूँछ, नीं आवे तो थारा दादा–माई सूँ पूछ।
5 फोडू तो गुठली नहीं कढे, खाऊँ तो स्वाद नहीं।
6 माड़ चाली, खेत चाली, लाल मणियों गाढ़ चाली।
7 चाँद–सूरज कै हुई लड़ाई, चम्पा बहन बचाबै आयी।
8 धौड़ी धरती कालो बीज, बोवन वाड़ो गावै गीत।

(ये पहेलियाँ फूल और तारा समूह,
कटार–फरिया के बच्चों ने बूझी है।)

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

एक आदमी था। उसके तीन लड़कियाँ थी। बड़ी लड़की का नाम बकरी था। उससे छोटी का नाम बिल्ली था। सबसे छोटी का नाम मुर्गी था। उनकी माँ की मृत्यु हो चुकी थी।

(कहानी की यह शुरूआत **प्रमिला सैनी**, उम्र–11 वर्ष, समूह–सागर के द्वारा की गई है। इस कहानी को आगे बढ़ाकर पूरी करो और मोरंगे को भेजो)

मोरंगे के चौथे अंक में दी गई कविता पंक्तियों को बहुत सारे बच्चों ने बढ़ाकर भेजा है। कुछ चुनी हुई कविताएँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

टीना, मीना, चिंकी चंदर, बड़ी शरारत उनके अंदर

रणवीर गूर्जर

1
टीना, मीना कक्षा चार
छक्के मारे एक हजार
जीतने पर बोले यार
अब करेंगे समुद्र पार
टीना, मीना, चिंकी, चंदर
बड़ी शरारत उनके अंदर

दीपक, मनराज, विक्रम
समह–सागर. जगनपरा

2
ससुरा बोला रेल में
सासू बोली खेल में
बंदर बोला पेड़ में

शेर बोला आजा अंदर
मैं हूँ गुफा के अन्दर
टीना, मीना, चिंकी, चंदर,
बड़ी शरारत इनके अन्दर

बलवीर गुर्जर,
उम्र–13 वर्ष, समूह–बादल,

3

टीना, मीना, चिंकी, चंदर
बड़ी शरारत उनके अन्दर
घर से रहतीं दिन भर बाहर
स्कूल के ना जाती अन्दर
गुल्ली मार के मटकी फोड़े
बस के आगे भागे–दौड़े
खेल खेल में मारे कट्टी,
बजा के घंटी करदे छुट्टी
टीना, मीना, चिंकी, चंदर
बड़ी शरारत उनके अन्दर

विष्णु गोपाल मीणा
शिक्षक, जगनपुरा

4

टीना, मीना, चिंकी चंदर
बड़ी शरारत उनके अंदर
दिनभर करते बड़ी शरारत
कभी बाहर तो कभी वे अंदर
कभी उछलते कभी कूदते
चल देते जंगल के अंदर
जंगल में तो भालू बंदर
भालू बंदर संग खेलते
खाते गाजर और टमाटर
अब घर में वह आ जाते
घर में भागते नीचे ऊपर
थककर खेलकर सो जाते
सपने देखते सुन्दर–सुन्दर

मैना
शिक्षिका, कटार–फरिया

इस चित्र पर कविता लिखकर मोरंगे को भेजो

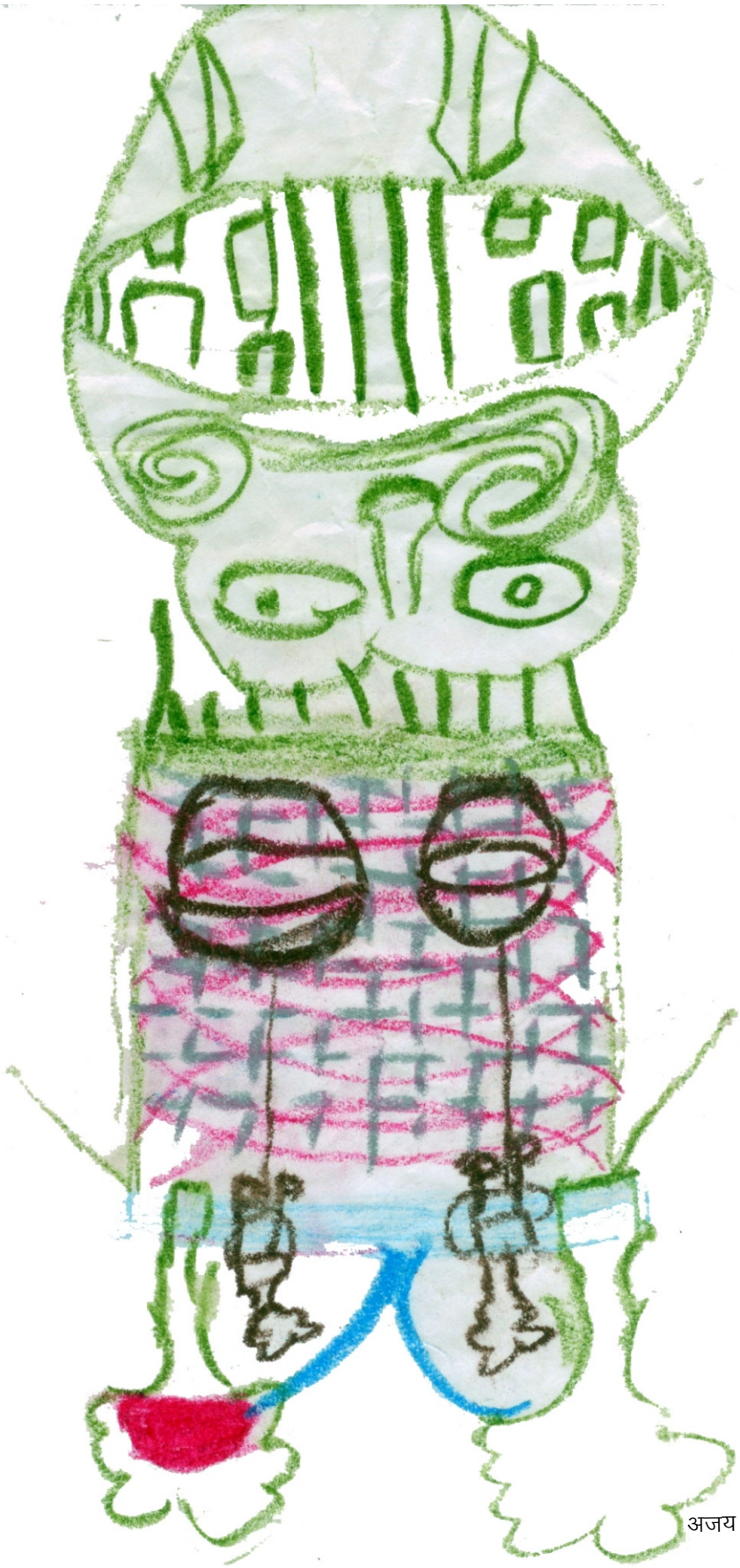

अजय कुमार सैनी

गंगाधरन मर गए

राजा के दरबार में मंत्री रोता चिल्लाता आया, ''हे भगवान गंगाधरन मर गए।'' राजा की आँखों में आँसू भर आए। वह दरबार ही छोड़कर चले गए। सभा बिखर गई। यह दुखी समाचार देने सब अपने घर दौड़े। घर से बात पड़ौस में फैली और फिर पूरे शहर में। यह उदासी देख महल की एक दासी रानी के पास गई। पूछा–''सारे शहर में मातम क्यों छाया हुआ है ?'' रानी ने दुख भरी आवाज में कहा–''गंगाधरन इस दुनिया में नहीं रहे।'' इस पर दासी ने पूछा–''गंगाधरन कौन थे ?'' रानी सोच में पड़ गई। वह खुद नहीं जानती थी कि गंगाधरन कौन थे। वह राजा के पास गई। पूछा–''ये गंगाधरन कौन थे, जिनके लिए हम सब रो रहे हैं ?'' राजा भी चक्कर में पड़ गए। झट मंत्री को बुलवा भेजा। मंत्री से भी कोई जवाब न मिला। राजा चिल्लाए–''पर तुम्हीं तो ये खबर लाए थे ?'' मंत्री काँपते हुए बोला, ''महाराज मुझे यह शोक समाचार धोबी ने दिया था। पता करता हूँ।''

मंत्री हाँफता–हाँफता धोबीघाट पहुँचा। उसके पूछने पर धोबी बोला–''सरकार! मैं नहीं जानता गंगाधरन कौन थे। वो तो मेरी पत्नी उसकी मौत को रो रही थी। मैंने शांत करने की बहुत कोशिश की। पर वह रोती रही। इसीलिए मैं भी रोता–रोता आपके पास आया।'' इतने में धोबी की पत्नी सिसकते हुए बोली–''हाय! मैंने उसे बेटे की तरह पाला था। हाय! मेरे प्यारे गधे मैं तुम्हारे बिना कैसे जी सकूँगी।'' मंत्री सिर पकड़ कर वहीं बैठ गया।

श्रीमोहन मीणा

तेरी मेरी, मेरी तेरी बात

सर, हमारे मोरंगे में चित्र कामी (क्यों) नहीं छापते हैं ? बताओ हम अच्छे चित्र बनाते हैं फूल मेंहदी बनाते हैं। मोरंगे हम को अच्छी लगती है।
राजकृन्ता, सन्जू, समूह–फूल, कटार–फरिया

हमारी मोरंगे में हम कहानी कविता तो भेजते हैं तो आप हमारी कहानी कविता को मोरंगे में नहीं भेजते हैं तो हमें बहुत बुरा गुस्सा आता है और ऐसा लगता है कि पत्रिका वालों को जाकर जैसे कहें कि हमारी उदय पत्रिका में कहानी कविता भेजते ही नहीं हैं। कविता हमारी जरूर आनी चाहिए।
रामसिया बाई गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–गुलशन

प्रिय राजकृन्ता,सन्जू और रामसिया बाई गुर्जर, मोरंगे की ओर से आपको नमस्ते। आपने आपकी कविता, कहानी व चित्र मोरंगे में नहीं छपने की जो शिकायत लिखकर भेजी है। वह बिल्कुल वाजिब है। लेकिन प्यारे बच्चो हमारे पास हर सप्ताह आपकी ओर से ढेरों रचनाएँ आती हैं और अगर उन सबको एक साथ छापने लगें तो कम से कम हमें सौ–दो सौ पन्ने तो चाहिए ही। और तुम तो जानते हो मोरंगे के पास तो कुल चौबीस ही पन्ने होते हैं। इसलिए बहुत सारी रचनाओं में से छाँटकर कुछ गिनी–चुनी रचनाएँ ही देनी पड़ती है। पर हम कोशिश करते हैं हर बार नए बच्चों की लेकिन अच्छी रचनाएँ छपे। ऐसा नहीं कि आप लोगों की रचनाएँ अच्छी नहीं होती लेकिन हम चाहेंगे कि हम आपको आपकी सबसे अच्छी रचनाओं के साथ छापें। और फिर देखो चार पाठशालाओं के मिलाकर सैकड़ों बच्चे हैं तो सारे बच्चों का नम्बर आते से ही आएगा। वैसे अभी चार ही तो अंक निकले हैं मोरंगे के। आगे के अंकों में सबको उनकी अच्छी कविता,कहानियों और चित्रों के साथ जगह मिलेगी। आपको नहीं छपने पर दुख होता है ऐसे ही हमको भी आपको नहीं छाप पाने पर दुख होता है। मोरंगे के पास कितने सारे सुंदर चित्रों और कविता कहानियों का ढेर है लेकिन वे सब छपी हुई नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं कि वे रचनाएँ अच्छी नहीं है। मोरंगे का कभी बुरा मत मानना।
तुम्हारे
मोरेंगे

नमस्ते प्रभात, मुझे आपकी मोरंगे अच्छी लगी है। उसमें से एक बात थर्माकोल का दाँत। उसमें वह बच्चा थर्माकोल के टुकड़े को अपना दाँत समझकर रोने लगता है वह बच्चा अच्छा लगा और मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगा क्योंकि उसमें मेरी कोई भी कहानी व कविता नहीं छपी है।
कर्मा मीणा, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

मोरंगे हमने पढ़ी है। उसमें हमको अच्छी लगने वाली कहानी कविता की बातें लिखेंगे। 'अवसर मिले होते तो मेरा भाई मशहूर निशानेबाज बनता' अच्छा लगा। उसमें हाँ भाई राम मिलायी जोड़ी बात अच्छी लगी। लड़के का नाम बिलाड़ी था, अच्छा लगा क्योंकि लोगों ने उसे नीचे

उतार कर देखा तो वह हँस रहा था।
प्रियंका मीणा, उम्र 10 वर्ष, समूह–सागर

हमने आपकी मोरंगे पढ़ी है। उस मोरंगे में हमें अच्छी लगने वाली बातें ये हैं। हमने पहली कहानी प्रभात गुरूजी की पढ़ी व उस कहानी का नाम है–'अवसर मिले होते तो मेरा भाई मशहूर निशानेबाज बनता' यह कहानी अच्छी लगी क्योंकि इसमें समझने की बात है। और हमें 'इज्जत' वाली कहानी में अच्छी बात लगी कि मैने 'मैडम की इज्जत बचाई लेकिन मैडम ने मेरी इज्जत नहीं बचाई' और मुझे थर्माकोल वाली कहानी में अच्छा लगा कि वह लड़का बोला–'मैडम मेरा दाँत टूट गया।'
रीना मीणा, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर

नमस्ते प्रभात, मुझे आपकी मोरंगे अच्छी लगी। उसमें एक बात मिस्टर बिल्ला बहुत मोटा था तो उससे कोई काम भी नहीं होता था उससे रखवाली भी नहीं होती थी। रोटी खाने में मस्त रहता था। यह बिल्ला अच्छा लगा और मुझे ये अच्छी लगी 'सूँई ने खोद दी कुँई' इसमें बात कहूँ साँची धन्या की बहू नाची। और मेरी कोई भी कविताएँ नहीं छपी।
बीना मीणा, उम्र–12 वर्ष, समूह–झील, जगनपुरा

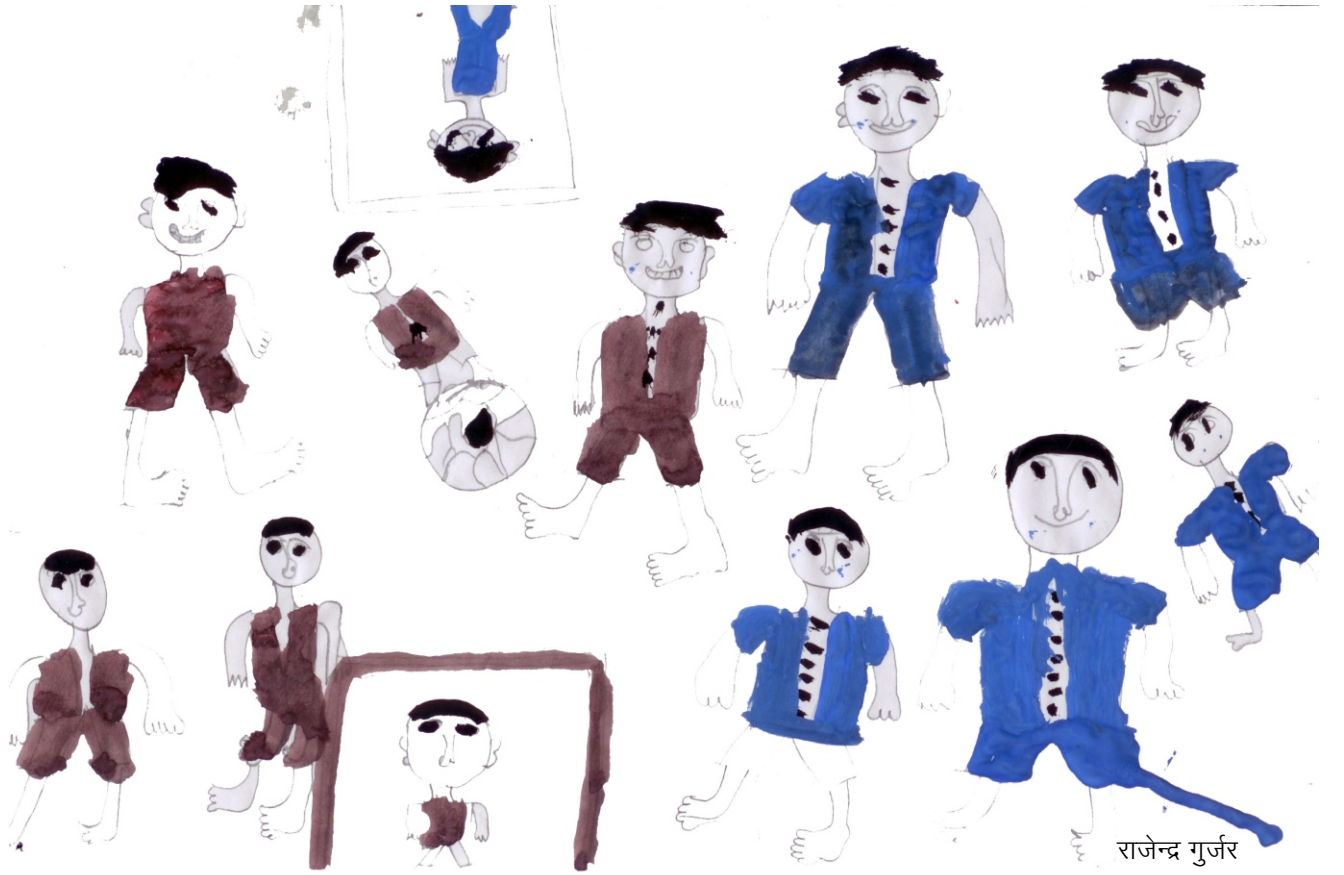

रूपकला

हिरण
२ रुपये
हरणी
पेंसिलने